भावके प्रकार एवं जागृती

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

-'भावजागृतिके लिए साधना' ग्रंथमाला एवं प्रस्तुत ग्रंथकी भूमिका ७

-ग्रंथके ज्ञानसंबंधी सूक्ष्म-विश्वके 'एक विद्वान'द्वारा भाष्य ८

-'सूक्ष्म' शब्दके संदर्भमें कुछ संज्ञाओंका अर्थ १२

-ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधिकाओंका परिचय १३

-संस्कृतनिष्ठ हिंदीके प्रयोग हेतु सनातनकी समर्थक भूमिका १५

१. 'भाव' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ १६

२. 'भाव' शब्दकी व्याख्या १६

* भाव अर्थात ईश्वरके अस्तित्वका निरंतर भान रहना १६

* भाव अर्थात ईश्वरके प्रति अत्यधिक प्रेम, निकटता (अपनापन) एवं शरणागतिके संगमसे अंतःकरणमें निर्मित स्नेह १६

* भाव अर्थात अनाहतचक्रमें विद्यमान मनःशक्तिका आत्मशक्तिमें रूपांतरण होना १६

* भाव अर्थात 'सत्-चित्-आनंद' इस अवस्थाकी ओर जानेके लिए प्रयास करना १७

३. भावके घटक १७

४. भावकी विशेषताएं १७

* भावके अनुसार साधकके सर्व ओर विद्यमान चैतन्यकणोंके कवचका रंग १९

* देवतामें विद्यमान चैतन्य व्यक्तिके भावानुसार होता है २०

* भावका प्राणोंसे संबंध द्वैतसे अद्वैतकी ओर जानेकी उत्सुकता बढानेवाला होना २१

* भोले भावसे युक्त जीवमें देहबुद्धि न होनेके कारण उसके सान्निध्यमें आनंद अनुभव होना २१

५. भावका महत्त्व **२१**

* अध्यात्ममें कृत्यका (आचरणका) नहीं; अपितु आधारभूत (कृत्यके पीछेके) भावका महत्त्व अधिक होना २२

* साधकसंख्या नहीं; अपितु भक्तिभाव महत्त्वपूर्ण होना २२

* चूक न हो, इस संदर्भमें भावका महत्त्व २३

* भावजागृतिके लिए प्रयत्न करना तथा अहं न्यून होनेका महत्त्व २३

६. भावके अनुसार परिणाम **२५**

* जलके प्रति अपने भावके अनुसार उससे आध्यात्मिक अथवा भौतिक लाभ होना २५

* कोई भी नामजप 'यह गुरुमंत्र है' ऐसा भाव रखकर करनेपर नामजपसे गुरुमंत्रका लाभ मिलना २६

* निर्जीव वस्तुओंका साधकोंसे बोलना २८

७. भावके लाभ **२९**

* भावके कारण स्थूलदेहकी शुद्धि होना २९

* भावयुक्त साधकसे चूक होनेपर भी परात्पर गुरुका उसकी प्रशंसा करना एवं उसकी चूकोंका परिमार्जन होना ३१

* भावके कारण साधकका स्थूलसे सूक्ष्मकी ओर, सगुणसे निर्गुणका ओर तथा व्यक्तिसे तत्त्वकी ओर मार्गक्रमण होना ३२

८. भावके प्रकार **३२**

* व्यक्त भावके लक्षण एवं उसकी उत्पत्ति हेतु कुछ आवश्यक प्रयत्न ३३

* अव्यक्त भावके कारण कोई भी कृत्य करते समय सहजतासे आनंदकी प्राप्ति होना ३५

* व्यष्टि भावकी अपेक्षा समष्टि भावयुक्त जीवकी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र होना ४८

* समष्टि भाव उत्पन्न होनेके चरण ५१

* क्षमाशीलता एवं ममता बढानेके लिए आवश्यक प्रयास ५६

* वात्सल्यभावकी उत्पत्तिके चरण ५६
* शरणागत भाव रखनेवाले जीवपर गुरुकी कृपा होकर उसका निर्गुणकी ओर अल्पावधिमें पहुंचना ६१
* भावके प्रकारके अनुसार ईश्वरसे आनेवाली सात्त्विक तरंगें ग्रहण कर पानेकी मात्रा ६४

९. किसी व्यक्तिमें 'भाव है' यह कैसे पहचानें ? ६५

१०. भावोत्पत्ति ६६

१० अ. रसनिर्मिति एवं भावनिर्मिति ६६
१० आ. भावजागृति ६६
* महत्त्व एवं आध्यात्मिक स्तरानुसार भावका प्रकटीकरण ६६
* भावजागृतिके लिए कुछ कृत्य ६७

११. भावावस्था एवं भावातीत अवस्था ७१

११ अ. गोपियोंकी निरंतर भावावस्था ७१
११ आ. भावके आगेके चरण ७२

१२. भाव तथा अन्य ७३

* भावोत्पत्तिके लिए ईश्वरको जाननेकी तीव्र लगन एवं जिज्ञासा होना आवश्यक ७३
* अहंभावकी शुष्कताके कारण ज्ञानमें अटकनेसे प्रगति अवरुद्ध होना ७७
* भाव एवं भक्तिका महत्त्व ७९

१३. भाव एवं अनुभूतियां ८१

१३ अ. भावावस्थामें होनेवाली अनुभूतियोंका अध्यात्मशास्त्र ८१
* अनुभूति, उन्नत पुरुषोंके आध्यात्मिक स्तरपर नहीं, अपितु साधकके भावपर अवलंबित होना ८२
* भावके कारण ईश्वरका किसी माध्यमसे अनुभूति देना ८४
१३ आ. साधकोंको भावके कारण हुई कुछ अनुभूतियां ८४

१४. सनातनके साधक एवं भाव ८६

भूमिका

'भाव' शब्दके संदर्भमें, देवता अथवा गुरुके प्रति प्रकट सगुण भाव, इतना ही सीमित अर्थ अधिकांश लोगोंको ज्ञात होता है । निर्गुण तत्त्वकी प्राप्ति करवानेवाले भाव विशिष्ट स्तरानुसार विविध प्रकारके होते हैं । इनका अभ्यास करनेपर भावजागृति हेतु प्रयत्न करनेके संदर्भमें एक नई दृष्टि मिलती है । इस ग्रंथमें व्यष्टि एवं समष्टि भाव, व्यक्त एवं अव्यक्त भाव, कृतज्ञता एवं शरणागत भाव, इस प्रकार भावके विविध प्रकार तथा उनका मनुष्यपर तथा उसकी साधनापर होनेवाले परिणामोंकी जानकारी दी है । साथ ही भाव कैसे पहचानें, साधनामें शीघ्र उन्नति हेतु तीव्र उत्कंठा एवं भावका समायोजन क्यों आवश्यक है, भाववृद्धि हेतु किए जानेवाले प्रयत्न, भावानुसार साधकके आस-पास रहनेवाले चैतन्यकणोंके कवचका रंग आदि अनेक नवीनतम पहलू स्पष्ट किए हैं । 'विचार एवं भावनामें परिवर्तन करनेसे कृत्यमें सुधार होता है तथा कृत्यमें परिवर्तन करनेसे विचार एवं भावनामें सुधार होता है', इस तत्त्वानुसार भाव निर्माण होनेके लिए मन एवं बुद्धिके स्तरपर निरंतर कृत्य करते रहनेसे भावजागृति निश्चित ही होती है । भावजागृतिके प्रयत्न आरंभ कर अंतमें भावातीत अवस्थाकी प्राप्तिके विषयमें मार्गदर्शन भी इस ग्रंथमें मिलेगा ।

यद्यपि ईश्वरीय कृपासे सनातनके साधकोंको प्राप्त यह ज्ञान प्रगत स्तरका होनेके कारण इसका आकलन कुछ कठिन है, तथापि जिज्ञासा एवं उत्कंठासे युक्त प्राथमिक अवस्थाके साधकके लिए भी इस ज्ञानका आकलन संभव है ।

श्रीगुरुचरणोंमें यही प्रार्थना है कि अपनी भाववृद्धि कर प्रत्येक व्यक्ति इस ग्रंथके ज्ञानका उपयोग ईश्वरप्राप्तिके लिए कर पाए । **- संकलनकर्ता**